रविवार, दिनाँक **11-06-2023** को सत्संग में हुए वचनों का संक्षिप्त विवरण

तेरा रूप इलाही सोहणियां, सच्ची सरकार जी

तेरे हत्थ विच डोर साजन जी सारे संसार दी

सजनों यह सुरत के अन्दर व बाहर दोनों तरफ से पवित्र होने जैसी बात है। सो हमें, आपको, सबको चाहिए कि हम अपने ख़्याल पर हर क्षण पहरा रखें यानि हमारा ख़्याल एक पल के लिए भी कामनायुक्त न हो अपितु सदा निष्कामता से कंचन अवस्था में सधा रहे ताकि जो हमारा यथार्थ आत्म-स्वरूप है वह सदा हृदय में प्रगट रहे। सजनों यदि हम ऐसा सुनिश्चित कर लेते हैं तो हमारा ख़्याल यानि सुरत कभी भी संसार में भटक व अटक नहीं सकता। इस तरह वह सदा अपने सच्चे घर में स्थित रहने में सक्षम हो जाता है। परिणामतः इंसान सबके प्रति अपने कर्त्तव्यों का कुशलता से सत्य-धर्म अनुरूप निर्वहन करते हुए अपने निर्विकारी स्वरूप को प्राप्त हो अपना जीवन आनन्दमय बना लेता है। यह सजनों अपनी अक्ल टिकाणे ला व ख़्याल को कंचन अवस्था में साध अक्लमन्द नाम कहाने की बात है। अब ध्यान से भजन सुनोः-

मन नूं भावन जी, मन नूं भावन जी रघुनाथ जी दे सांवले चरण।।

शिव ब्रह्मा तुहाडा ध्यान लगावे, महाबीर जी चरणां विच बाहवन जी।

रघुनाथ जी दे सांवले चरण, मन नू भावन जी।।

कोई गावे कोई ताल बजावे, नारद जी बीन बजावन जी।

रघुनाथ जी दे सांवले चरण, मन नू भावन जी।।

कोई जंगलां विच धूनियां लावे, कोई सिर ते जटा वधावन जी।

रघुनाथ जी दे सांवले चरण, मन नू भावन जी।।

कोई जावे गंगा कोई जावे जमना, कोई चारे धाम पये धावन जी।

रघुनाथ जी दे सांवले चरण, मन नू भावन जी।।

काम क्रोध नू भैणां परे हटाओ, रघुनाथ जी सांवले चरण दिखावन जी।

रघुनाथ जी दे सांवले चरण, मन नू भावन जी।।

मैं दासी तुहाडे चरणां दी प्यारी, ए चरण हृदय विच राहवन जी।

रघुनाथ जी दे सांवले चरण, मन नू भावन जी।।

सजनों इस भजन के अन्तर्गत सच्चेपातशाह जी समय काल अनुरूप जो युग-परिवर्तन का खेल चल रहा है, उसके प्रति सबको सचेत करते हुए कहते हैं कि आत्म-विस्मृति के कारण भ्रमित बुद्धि इन्सान आत्मज्ञान से वंचित होने के कारण सच्चे आनन्द की ख़ोज में इधर-उधर भटकता रहता है। परन्तु जीवन के कर्त्तव्यों से विमुख हो कर्मकाण्डों के, आडम्बरों में फँसे हुए उस इन्सान को वह आनन्द जंगलों में जाकर, भस्में रमाकर, कई अन्य खेले रचाकर व गुरु-चेले का भाव अपनाकर नहीं प्राप्त होता। इन्हीं आडम्बरों ने सजनों सबके दिलों से ऐक्य-भाव छुड़ाकर द्वि-द्वेष व वड-छोट का भाव स्थापित कर दिया है और ईश्वर के राज्य को अपना राज्य बना दिया है। निःसन्देह यह अपना प्रभुत्व जमाने हेतु ही हो रहा है जबकि सब जानते हैं कि किसी के लिए भी ईश्वर की इस पृथ्वी पर अपना प्रभुत्व जमाना नाजायज है, उस ईश्वर की अवज्ञा है और कुदरत के खेल के विपरीत 'मैं' युक्त बात है। ऐसे में सच्चेपातशाह जी कहते हैं कि यह सारा संसार आत्म-विस्मृति के कारण जो भी अजीब-ओ-गरीब हरकतें विभिन्न बाल-अवस्था के भक्तिभाव अपनाकर कर रहा है, उसके अन्तर्गत और कुछ नहीं अपितु मन्द-बुद्धि सजनों को अपने में उलझाकर अपने पीछे चलाने का दुर्भाग्यपूर्ण खेल रच रहा है परन्तु मुझे उससे कुछ नहीं लेना देना। मेरा मन तो उनसे शत-प्रति-शत आज़ाद है क्योंकि मेरे मन को तो रघुनाथ जी के साँवले चरण ही भाते हैं। यहाँ रघुनाथ जी के आचरण से तात्पर्य उनके दर्शाये जीवन-पथ से है। अतः मुझे तो वही पथ भाता है क्योंकि वह रास्ता सत्य-धर्म को स्थापित करने के प्रति व उखड़े दिल मिलाने के निमित्त समर्पित है यानि इन्सानों को आत्म-स्मृति में लाने का हेतु है। यही आज समय की सर्वप्रथम माँग है।

इसी माँग के दृष्टिगत सजनों अज्ञानमयी अवस्था को प्राप्त हुए इन्सानों को आत्मिकज्ञान से परिचित कराओ। इस तरह सबको स्वयं की ताकत/शक्ति व वास्तविक अस्तित्व से परिचित कराओ और यह सत्य जनाओ कि मैं अजर-अमर आत्मा के सिवाय और कुछ भी नहीं हूँ। कीड़ी से लेकर हाथी तक व ब्रह्मा से लेकर तृण तक ब्रह्म के अलावा और कुछ नहीं है। जानो इस तरह सबको सर्वव्यापक ईश्वर का बोध कराने व दिव्य दृष्टि का सबक़ लेने के योग्य बनाने के निमित्त ही कुदरत की अपार कृपा बरसी और कुदरत ने समभाव समदृष्टि के स्कूल की स्थापना करवा दी। यहाँ जानो कि समभाव समदृष्टि का स्कूल कुदरत प्रदत्त एक ऐसा स्त्रोत है जहाँ से आत्मज्ञान की पढ़ाई को पढ़-समझकर प्रयोगात्मक रूप में लाने के प्रति सबको सक्षम बनाया जा रहा है। इस सक्षमता से मन्द-बुद्धि इन्सान भी उच्च-बुद्धि व उच्च-ख़्याल हो जाता है यानि उसका ख़्याल मनुराज से इतना ऊपर उठ जाता है कि सुरत और शब्द का तारतम्य बना रहता है और हमेशा सम अवस्था यानि एकता, एक-अवस्था व समरसता का प्रसार होता है। ऐसा होने पर इन्सानों को समझ आ जाती है कि इस संसार में दूसरा कोई नहीं जिसके साथ वैर-विरोध, छल-कपट या कुछ भी किया जाए। अतः सजनों भूल से भी किसी के प्रति ईर्ष्या द्वेष कर ऐसा करना अन्याय करने की बात है। यहाँ हम मानते हैं कि छल-कपट, झूठ-निन्दा आदि करने से संसारी धन किसी रूप में किसी के पास आ जाता हो पर असली धन जोकि आत्मिक शक्ति है, धीरे-धीरे उसे प्राप्त करने के चक्कर में इन्सान अपनी आत्मा तक को बेच देता है। भ्रष्टाचारी ऐसा ही करता है जिसका दुष्परिणाम बुरा आता है। जानो यथार्थ व्यक्तित्व को बेचना यानि उसको भूल जाना, आत्म-स्वरूप के गुण-धर्म अनुसार कुछ न कर पाने की बात होती है। अन्य शब्दों में ऐसा होने पर जो कोई भी हमें सांसारिक धन या किसी भी रूप में अन्य कुछ दे देता है तो हम उसी के अधीन हो जाते हैं। अब जो वह कहता है हम वही करते हैं। नौकरी वाले नौकर भी यही करते हैं। आपस में भी यही होता है, यही सब जगह होता है और यही कुल संसार में हो रहा है। यहाँ याद रखो कि जो अपनी यथार्थ शहनशाही अवस्था की प्रतीति रखता है, वह सन्तोषी कहलाता है। यह होता है आत्मिकज्ञान प्राप्तकर हृदय में सत्य को स्थापित करना व मानव धर्म अनुसार आचरण करना। ऐसा होने पर एक-निगाह, एक-दृष्टि हो जाती है और एक दर्शन में ख़्याल की स्थिति बनी रहती है। जैसा कि सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में कहा भी गया हैः-

एक ही मैं हो चुका दूसरा नहीं कोय।

दूसरा कोई किस तरह कहे जब एक एक ही होय।।

कौन करे मेरी मानता, कौन करे मेरी पूजा।

एक हूं सारे भूमण्डल, है नहीं कोई दूजा।।

सजनों यह सबसे उत्तम अवस्था है और सत्य है। यही है सजन श्री शहनशाह महाबीर जी के द्वारे की महानता और महत्त्व। अतः सजनों अपने जीवन के उद्देश्य को सिद्ध करने के लिए इस द्वारे पर समर्पित हो जाओ यानि कुर्बान हो जाओ। इसी सन्दर्भ में अब ध्यान से सुनोः-

(महाबीर जी के मुख के शब्द, श्री साजन जी को कह रहे हैं)

रघुवर जी नाल करलौ प्यार प्यार, रघुवर जी रहे ने बुला आपनूं।

कुछ बात चीत ओन्हां करनी ऐं, कलुकाल दी पीड़ा हरनी ऐं।।

अंग संग राहवन ओ नाल ओ नाल, रघुवर जी रहे ने बुला आपनूं।।

ओ बात ऐसी सुनावनगे, जगत विच रोशनी लियावनगे।

हनेरा ओ देसन मिटा मिटा, रघुवर जी रहे ने बुला आपनूं।।

रोशनी ओही प्रकाश वी ओही, हर वस्तु विच निवास वी ओही।

ओ होसन दीनदयाल दयाल, रघुवर जी रहे ने बुला आपनूं।।

धर्म दा झण्डा झुलांवनगे, सुकर्मां दा राज लियावनगे।

ठण्डी आवे हवा हवा, रघुवर जी रहे ने बुला आपनूं।।

रघुनाथ जी लीला ऐसी वर्तावनगे, विसूचिका दी सूचका दिखावनगे।

कलयुग दा बखेड़ा देसन मिटा मिटा, रघुवर जी रहे ने बुला आपनूं।।

सजनों हमें समझ नहीं आती कि सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ की वाणी बार-बार सुनने के बाद भी क्योंकर आपका स्वाभाविक परिवर्तन नहीं हो पा रहा? क्या संसार में उलझकर इतने दुर्मति हो गये हो कि जीवनोपयोगी ज्ञान, यानि सद्मार्ग अपनाने की हिम्मत ही खो बैठे हो। क्यों कर सजनों इतने नादान हो गए हो? यह बात खुद से खुद पूछो और खुद को खुद ही समझाओ। ऐसा करके अपने जीवन पर घात मत लगाओ क्योंकि यह अपने साथ आप अनर्थ करने की बात है। जानो जो भी सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के शास्त्र-विहित वचनों की अनदेखी या अनसुनी कर मनमत अनुसार चलता है, वह जन्म-मरण की ओर बढ़ता जाता है। अब कहाँ तो हमने अपनी अजर-अमर हस्ती की पहचान कर यथार्थता अनुसार जीवन जीना था और कहाँ हम बहिर्मुखी हो गए। अब आप ही बताओ कि अजरता अनुसार जीवन जीने में हमारी शान है या मरने में हमारी शान है? सजनों जीवन की यथार्थता को समझो और अजरता-अमरता के भाव में स्थिरता से बने रह मौत के भय से आज़ाद होकर जगत में सुखानन्द से विचरो।

याद रखो जगत को चलायमान रखने के लिए ही तो मानव चोले में आपका जन्म हुआ है। यहाँ स्पष्ट कर दें कि जगत को चलायमान रखने से आशय केवल बच्चा पैदा करने से नहीं है। इससे तात्पर्य है कि जो सन्तान उत्पन्न होती है उसके अन्दर उसकी यथार्थता अनुरूप, ज्ञान व गुण का वर्द्धन करो। इसी तरह सृष्टि सत्य रूप से चलायमान हो पाती है परन्तु इसके लिए शादी से पहले ही यानि युवा अवस्था में ही आत्मिक ज्ञान प्राप्त करना होता है ताकि आपका प्यार एक के साथ हो। वह एक कौन है? - जो आपकी आत्मा में शोभायमान परमात्मा है। आपका ख़्याल/सुरत उसी एक की ही सदा बनी रहे और उसी की सर्व-शक्तिमानता व सर्व-व्यापकता का भान करते हुए सब आत्माओं का आदर करे। भूल से भी वह किसी का निरादर न करे। सजनों यह है एक-अवस्था में बने रह एकता के प्रतीक बनना। इस सन्दर्भ में सच्चेपातशाह जी कहते हैंः-

नकली दुनियां ते आये के सजनों केहड़ा कर्म कमाया।

क्या करने आये क्या कर रहे, ओ आल्हा जन्म गवाया।।

सजनों यह मानव चोला मृत्य के चक्रव्यूह में पुनः-पुनः फँसने के लिए नहीं मिला क्योंकि मानव तो एक विवेकशील प्राणी है और विवेकशील प्राणी अजरता-अमरता के भाव से इस जगत में विचरता है। मृत्य तो उसे आती है जो आजीवन रोना-झुखना करता है। इसके विपरीत जीवन का आनन्द वही प्राप्त कर पाता है जो अपने आपको अजर-अमर समझता

है। मृत्यु उसका कुछ भी नहीं बिगाड़ सकती। इस तरह वह आत्मज्ञान के बलबूते पर निर्भयता से इस भाव से आज़ाद होकर जगत में विचरता है। तभी तो वह खुद सम्पन्न रहते हुए जीवन के सत्य-पथ पर धर्म-संगत निष्कामता से आगे बढ़ता है और कुल विश्व में धर्म का झण्डा बुलन्द करता है। यहाँ सजनों समझो कि जब अन्दर धर्म स्थापित हो जाता है तो असत्य-अधर्म का विध्वंस हो जाता है और अन्दर की लंका भस्म हो जाती है। इस तरह अपने मालिक आप होने का हक़ हमें प्राप्त हो जाता है और हम समझदार बन ईश्वर के आज्ञाकारी सुपुत्र बन जाते हैं। जब ऐसा होता है तो हम सिर्फ सुकर्म ही करते हैं। अब जिस परिवार में, समाज में सुकर्मों का राज स्थापित हो जाता है वहाँ अपने आप में बहुत ही सुन्दर आनन्दप्रदायक वातावरण बनता है। इस आनन्द से फिर सबके हृदयों को ठण्डक पहुँचती है क्योंकि तब सर्वत्र निर्मलता भासती है। अब जहाँ निर्मलता भासती है, वहाँ सत्य प्रगट रहता है।

इस महत्ता के दृष्टिगत ही सजनों सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ सबको आवाहन दे रहा है कि आत्मज्ञान प्राप्त करो और हृदय अन्धकार मिटाकर मन को प्रकाशित कर लो। इस तरह जो हर मन में शोभित है, उसका साक्षात्कार कर खुद की पहचान कर लो। ऐसा होने पर मन की कलुषता समाप्त हो जाएगी और सत्य प्रकाशित हो जाएगा। तब आपको ज्ञात हो जाएगा कि 'मैं कौन हूँ, मैं कहाँ से आया हूँ, क्या करने आया हूँ, और कितने समय में मुझे यह सब करना है'। तब हमें इन सारी बातों का ज्ञान हो जाएगा और हम किसी से हार नहीं खा सकेंगे, न ही किसी के वशीभूत होकर कमज़ोर पड़ेंगे, न ही कभी रुकेंगे व न ही कभी कुपुत्र बनने वाले काम कर दुर्मति बनेंगे। सो सजनों सुपुत्र बनो क्योंकि सुपुत्र सबका प्यारा होता है। ऐसे पुत्र को योग्य व भरोसेमन्द समझकर परमपिता परमेश्वर उसे सब कुछ दे देते हैं। इस तरह उसकी सब इच्छाएँ समाप्त हो जाती हैं और वह जी भरकर निष्काम भाव से सेवा करने में सक्षम हो जाता है। यहाँ याद रखो कि ऐसी सेवा में आदर की इच्छा कदापि नहीं होती। ऐसा सच्चा सेवक कभी नही डोलता क्योंकि उसके अन्दर सदा सत्य प्रगट रहता है और वह अजरता-अमरता के भाव में स्थित होकर वज्र हो जाता है। ऐसे वज्र इन्सान को फिर न तो मान खल सकता है, न अपमान, न अमीरी खल सकती है, न गरीबी। ऐसा सतवादी इन्सान तो फिर एकता, एक-अवस्था का प्रतीक बन जाता है। फिर चाहे उसे कोई कितने भी प्रलोभन क्यों न दे, वह किसी के प्रभाव में नहीं आता। इस तरह वे सब उसके आगे हार खा जाते हैं और उसके आगे किसी की कोई चाल नहीं चलती।

वह किसी की मानता नहीं करता और न ही किसी से मानता करवाता है। इस तरह उसके अन्दर वड-छोट का, दूसरेपन का सवाल पैदा नहीं होता। वह तो केवल शब्द को गुरु मानता है और तद्नुरूप सतयुग का चलन ही अपनाता है। इस तरह उसकी सुरत व शब्द का संग सदा बना रहता है और मन संकल्प-रहित बना रहता है। जानो सूक्ष्म संकल्प भी अन्दर विछोड़ा पैदा कर देता है। अतः संकल्प का उपजना कमज़ोरी की निशानी है। ऐसा होने पर ब्रह्मसत्ता का प्रवाह अवरुद्ध हो जाता है और इन्सान कमज़ोर पड़ जाता है। इसके विपरीत जब सुरत शब्द का मेल बना रहता है तो ब्रह्मसत्ता रोम-रोम, रग-रग में भरपूर रहती है और इन्सान सर्व-समर्थ हो जाता है। यह है मानव की श्रेष्ठता की पहचान। जिस मानव को यह श्रेष्ठता प्राप्त होती है, वह मानव मानव नहीं रहता अपितु वह तो परमात्म स्वरूप हो जाता है। इसीलिए तो सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ यह सन्देश दे रहा है कि अपने स्वरूप को पहचानो। इस हेतु आत्मिकज्ञान प्राप्त करो और बच्चों को भी करवाओ। आप ऐसा करने में सक्षम हों इसलिए आप सबको १५ जून २०२३ से १८ जून २०२३ तक वसुन्धरा बुलाया है। अपने युवा बच्चों को इस बाल युवा जीवन उत्थान शिविर में अवश्य भेजना। चाहो तो आप भी आ सकते हो। जानो ऐसा होने पर भटके हुए भी सम्भल जाओगे और विसूचिका समाप्त हो जाएगी। कहने का आशय यह है कि जब आधि-व्याधि के रोग मिट गये और शरीर के प्रति मोह भंग हो गया तो सुरत अन्तर्मुखी हो प्रकाश नाल प्रकाश हो जाएगी। आप भी सजनों इस प्रकाशमय अवस्था में आने हेतु इस शिविर में जरूर आओ और अपनी अक्ल टिकाणे लाने के लिए जानो कि आत्मिकज्ञान क्या है, उसका लाभ क्या है व उसको प्राप्त करने वाले का चारित्रिक स्वरूप कितना सुन्दर और पवित्र हो जाता है। यह सारी बातें उस प्रोग्राम में होंगी। अतः इससे आप अपने आपको वंचित मत रखना। अपने व अपने बच्चों के सजन बनना ताकि सबका जीवन सुन्दर, सरल व सहज बने। इस बात की सूचना सबको दे देवें।

आप सब ऐसा करने में कामयाब हों, इन्हीं शुभकामनाओं सहित।